National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 112-114

पंडित जवाहरलाल नेहरू समाजवाद की आनुप्रायोगिक अभिकल्पना

अखिलेश त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

पण्डित नेहरू का शैशव एक ऐसे परिवार में प्रारम्भ हुआ जब भारत में स्वतंत्रता का मुक्ति संग्राम अपनी निरन्तरता में था। पण्डित नेहरू का परिवार राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियों का अभिकेन्द्र था। स्वाभाविक रूप से नेहरू जी के चिन्तन पर प्रथमतः प्रभाव उनके पारिवारिक परिवेश का पड़ा जो जीवन पर्यन्त छाया के सदृश साथ बना रहा। पण्डित नेहरू की विचार शैली पर उसके लक्षण स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते हैं।[1] नेहरू जी पर तीन व्यक्तियों का प्रभाव स्पष्टतया पड़ा जिसे वह स्वयं स्वीकार करते हैं। प्रथमतः अपने पिता से, द्वितीय महात्मागांधी से, जिनसे अपने व्यक्तित्व को विकसित करने की अनुप्रेरणा प्राप्त की थी तथा तृतीय पण्डित नेहरू ने कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ टैगोर से वैश्विक दृष्टि प्राप्त की थी।[2] इसके अतिरिक्त पण्डित नेहरू के चिन्तन के उद्भव एवं विकास में पाश्चात्य विचारकों एवं दर्शन का भी विशिष्ट योगदान रहा, जिसकी परिचर्चा उन्होंने अपनी आत्म कथा में की है। 1905 में नेहरू जी विद्याध्ययन के लिए इंगलैण्ड के प्रवास पर गये। प्रस्थान के एक वर्ष बाद 1906 में ब्रिटेन में आम चुनाव आयोजित थे। इस आम चुनाव में उदारवादियों को सफलता प्राप्त हुई थी। इस परिघटना ने नेहरू जी के मन मस्तिष्क को गहरे रूप से अनुप्राणित किया।[3] ब्रिटिश उदारवाद की अमिट छाप उनके अन्तरमन में सदैव विद्यमान रही। इसी उदारवाद से अनुप्रेरित होकर पंडित नेहरू भारतीय संदर्भ में समाजवाद शब्द का अनुप्रयोग करते थे। वह समाज वाद नहीं था प्रत्युत सीधे अर्थो में ब्रिटिश उदारवाद था। शिक्षा के निमित्त ब्रिटिश प्रवास के समय मेरीडिथ टाउन सेण्ड की प्रसिद्ध कृति 'एशिया और यूरोप' के स्वाध्याय से पण्डित नेहरू का मानसिक आकर्षण राजनीति की ओर हुआ। इसे पण्डित नेहरू स्वयम् स्वीकार करते हैं।[4] इस पुस्तक ने पण्डित नेहरू की आभ्यान्तरिक सम्वेदना को इतना झंकृत कर दिया कि अब पण्डित नेहर की एशिया और यूरोप की राजनीतिक परिघटना में गहरी अभिरुचि जागृत हो गयी। फलतः एशिया और यूरोप की राजनीतिक घटनाएं नेहरू जी को गहरे रूप में अनुप्राणित करने लगीं। पण्डित नेहरू ने इसी समय के फेबियन तथा अन्य समाजवादी सिद्धान्तों से सम्बन्धित ग्रन्थों का गहन अनुशीलन किया। फलतः समाजवाद के प्रति पण्डित नेहरू के मन में चंचल आकर्षण और जिज्ञासा क्रमशः बढ़ती गयी। राजनीतिक सिद्धान्तों के गहन अनुशीलन–मनन ने पण्डित नेहरू को तत्कालीन राजनीतिक आन्दोलन अब वैचारिक रूप से स्पन्दित करने लगे, इन आन्दोलनों के प्रति उनकी रूचि दिनों दिन बढ़ती गयी। नेहरू जी के चिन्तन के उद्भव में ब्रिटिश उदारवाद का अधिक योगदान रहा है। उदार समाजवादी, विकासवादी सिद्धान्त को मानते हैं। उदार समाजवादी वैधानिक साधनों के माध्यम से शासन व्यवस्था में परिवर्तन का पक्षपोषण करते थे। वे वैधानिक साधनों के माध्यम से समाजवादी समाज को प्रतिस्थापना करना चाहते थे।[5] फलस्वरूप पं0 नेहरू सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक तथा धार्मिक समस्याओं का समाधान वैधानिक साधनों के माध्यम से करना चाहते थे।

पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गान्धी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। परन्तु महात्मा गांधी के सिद्धान्तों में उनकी आस्था सीमित रही है। भारत के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास के सम्बन्ध में उनमें और गांधी जी में व्यापक अन्तर है। कभी–कभी प्रतीत होता है कि गांधी और नेहरू दोनों एक दूसरे के विपरीत छोर हैं। पण्डित नेहरू के ऊपर महात्मा गांधी के 'साध्य और साधन की पवित्राता' के सिद्धान्त का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, इस तथ्य को पण्डित नेहरू स्वयं स्वीकार करते हैं।[6]

जिस कारण से नेहरू जी चौथे दशक के प्रारम्भिक वर्षो में साम्यवाद की ओर आकृष्ट हुए, वह उनके सिद्धान्तों का ध्रुव वैपरित्य था।[7] उन्होंने देखा कि संसार साम्यवाद और फासीवाद के मध्य भीषण संघर्ष में संलग्न होने जा रहा है, इसी परिवेश में उन्होंने साम्यवाद की ज्यादतियों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि मेरा ध्रुव विश्वास है कि आज विश्व को मूलतः साम्यवाद एवं फांसीवाद के दो रूपों में से किसी एक रूप का चुनाव करना होगा, और मैं पूर्णतः साम्यवाद के पक्ष में हूँ। कोई मध्यम मार्ग नहीं है। मैं साम्यवाद को आदर्श के रूप में चुनता हूँ।8 पंडित नेहरू पर समाजवादी अथवा लोकतंत्रावादी होने के पूर्व कुछ विचारक कुलीनतंत्राी होने का भी आरोप लगाते हैं। इस आरोप में कुछ सत्यांश अवश्य है, जिसे पण्डित नेहरू स्वयं स्वीकार करते हैं। ''मैं प्रतिरूप या आदर्श रूप से बुर्जुआ विचार का हूँ, बुर्जुआ परिवेश में पाला पोशा गया और उन्हीं विचारों से घिरा हूँ।''[9]

नेहरू जी की रचनाओं में समाजवाद की चर्चा बहुतायत मात्राा में मिलती है। स्वयं पंडित नेहरू ने इस सम्बन्ध में कहा था, मैं विशुद्ध राष्ट्रवादी था जब कि मेरे अध्ययन के दिनों में मेरे समाजवादी आदर्श पृष्ठ भूमि में चले गये थे।[10] सन् 1927 में यूरोप में आयोजित होने वाले 'दलित सम्मेलन' के समय पं0 नेहरू यूरोप में ही थे। इसे ब्रुसेल्स सम्मेलन के नाम से भी जाना जाता है। उसमें भाग लेने के लिए आये हुए प्रतिनिधियों से नेहरू जी का सम्बन्ध स्थापित हुआ। इस सम्मेलन की विचार धारा का प्रभाव पण्डित नेहरू पर व्यापक रूप से पड़ा। ब्रुसेल्स कांग्रेस के वाद नेहरू जी का सम्बन्ध अन्य समाजवादियों से भी हुआ। 1927 के अन्त में नेहरू जी साम्यवादी क्रान्ति (बोल्शेविक क्रान्ति) की दसवीं वर्ष गाँठ में भी भाग लिया। तत्कालीन सोवियत संघ की यात्राा से पंडित नेहरू गहरे रूप से प्रभावित हुए। नेहरू जी रूस की आर्थिक, शैक्षिक प्रगति से विशेष रूप से प्रभावित हुए तथा इसी आधार पर सोवियत रसिया नामक पुस्तक का प्रणयन किया। इस पुस्तक में उन्होंने लिखा कि रूस के अनुभवों से भारतीयों को बहुत ही अधिक सहायता मिल सकती है। रूस की स्थिति से भारत की स्थिति अधिक भिन्न नहीं है।[11] इस रूसी यात्राा का यह परिणाम निकला कि उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि रूस ही विश्व में साम्राज्य विरोधी राज्य है तथा रूस और भारत संयुक्त रूप से मिलकर ब्रिटिश साम्राज्य विरोधी नीति का अनुकरण कर सकते हैं।[12]

नेहरू जी ने ब्रुसेल्स कांग्रेस एवं रूस की यात्राा करने के बाद भारत वापस आने पर 1929 में श्रमिकों के 'राष्ट्रीय कांग्रेस' में सम्मिलित

हुए। उन्होंने 1933 में भारत के सन्दर्भ में कहा, साम्राज्यवाद एवं पूंजीवाद के विरूद्ध भारत का संघर्ष विश्व संघर्ष का स्वरूप धारण कर लेगा। एक स्थल पर पं0 नेहरू ने कहा था, राष्ट्रवाद ही सब कुछ नहीं है प्रत्युत राष्ट्रवाद के अतिरिक्त एक सामाजिक क्रान्ति की महति आवश्यकता है। पण्डित नेहरू ने अपने गहन अध्ययन अनुशीलन में यह अनुभूति की कि राष्ट्रवाद की अवधारणा जिसमें सामाजिक आर्थिक चिन्तन का अभाव हो विश्व को प्रगति के पथ पर अग्रसर नहीं कर सकता। भारत के राष्ट्रवादियों को सामाजिक क्रान्ति की प्रगतिशील विचार धारा का अनुसरण करना चाहिए।[13] नेहरू के उपर्युक्त विचारों पर रूस की प्रगति एवं साम्यवाद का प्रभाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। नेहरू जी का विचार पक्ष 1930 तक साम्यवादी सिद्धान्तों से ओत–प्रोत बना रहा। परन्तु पंडित नेहरू अपने आप को समाजवाद के किसी भी सैद्धानितक पक्ष से स्थायी रूप से सम्बद्ध रखने में असफल रहे। तीस के दशक में पंडित नेहरू समाजवाद के मानवतावादी पक्ष में विश्वास करते थे न कि उसके आर्थिक निहितार्थ में।[14] पण्डित नेहरू ने दूसरी पंचवर्षीय योजना का प्रारूप प्रस्तुत करते हुए कहा था कि मैं समाजवाद की परिभाषा प्रस्तुत नहीं करना चाहता हूँ कि इस शब्द का वास्तविक निहितार्थ क्या है, क्योंकि हम संकीर्ण और सैद्धान्तिक विचार धारा के पक्षपाती नहीं हैं। अपने जीवन के प्रारम्भिक समय में नेहरू जी मार्क्सवाद से काफी प्रभावित हुए थे, जिसकी ओर संकेत अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'विश्व इतिहास की झलक' (भाग 1 सन् 1965) में किया है। परन्तु मार्क्स वाद के प्रति उनका लगाव क्षणिक मात्रा था।

महात्मा गांधी का स्नेहिल संरक्षण, बापू का व्यक्तित्व तथा सत्य के प्रति अनन्य आस्था, व्यक्ति को गरिमा प्रदान करने की आकांक्षा ने पण्डित नेहरू को प्रजातंत्रा के प्रति पूर्णरूपेण आस्थावान बना दिया। फलतः पण्डित नेहरू की वर्ग संघर्ष में अनास्था शनैः शनैः बढ़ती गयी, इसकी परिणति इस रूप में भी हुई कि प्रतिक्रियावादी साधनों के माध्यम से सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन कर समाजवादी समाज के निर्माण की परिकल्पना पर पण्डित नेहरू संदेह करने लगे।[15] 1950 के दशक में साम्यवाद तथा समाजवाद के प्रति पंडित नेहरू के दृष्टिकोण में पर्याप्त भिन्नता आ चुकी थी। 1930 के दशक का दृष्टि कोण जब वह सोवियत प्रजातंत्रा के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया करते थे, 1950 के आते–आते पण्डित नेहरू मिश्रित अर्थव्यवस्था का पक्षपोषण करने लग थे। मिश्रित अर्थव्यवस्था समाजवादी लक्ष्य की ओर शान्तिपूर्ण, वैधानिक एवं लोकातांत्रिाक तरीकों से मंथर गति से बढ़ना है। नेहरू जी ने साम्यवादियों की योजना के संदर्भ में दबाव की शैली की आलोचना की।[16] कुछ व्यक्तियों ने आश्चर्य व्यक्त किया कि साम्यवाद के ध्येय को हिंसा के बिना प्राप्त किया जा सकता है? और इन व्यक्तियों ने वही पुराना प्रश्न दोहराया कि क्या बिना रूस के सिद्धान्तों को ग्रहण किये नेहरू जी रूस के आशीर्वाद को प्राप्त कर सकते हैं? परन्तु यह समाजवाद के सामंजस्यपूर्ण तरीको की अर्थव्यवस्था में से एक है। इसी में पण्डित नेहरू ने अपने विश्वास को व्यक्त किया है।[17] नेहरू जी के समाजवाद में व्यक्तिवाद एवं उत्पादन वृद्धि की आकांक्षा सदैव विद्यमान रही है। पंडित नेहरू यूरोपीय सभ्यता के भक्त थे। स्वाधीनता उनकी दृष्टि में इसलिए आवश्यक थी कि भारत यूरोप की तरह अपना विकास कर सके, जिसका प्रतीक इंग्लैण्ड का उदारवाद है। नेहरू जी की उग्र राष्ट्रीयता और सामाजिक परिवर्तन की इच्छा समय व्यतीत होने के साथ अधिकाधिक यूरोपीय सभ्यता के लगाव के समक्ष गौण पड़ती गयी।[18]

पारम्परिक अर्थों में नेहरू जी राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे पण्डित नेहरू में राजनीतिक अवधारणाओं और राजनीतिक वास्तविकताओं के प्रति आदर भाव था, पण्डित नेहरू ने इन्हें आत्मसात किया। कोई भी व्यक्ति राजनीतिक दार्शनिक के रूप में चिन्तन करता है तथा राजनीतिक दार्शनिक के रूप में आदर्श और वास्तविकता में कम या अधिक अन्तर करता है। वर्तमान राजनीतिक विचारों की समस्याओं को भविष्य के तर्को और नैतिक सिद्धान्तों के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता है प्रत्युत व्यक्ति के वास्तविक क्रिया कलापों से सम्बन्धित होता है। दूसरे शब्दों में दर्शन और वास्तविक तथ्य एक दूसरे के पूरक हैं, जबकि नेहरू जी ने वास्तविक तथ्यों को भविष्य पर छोड़ दिया है। 1933 में पण्डित नेहरू ने अपनी पुत्राी श्रीमती इन्दिरा गांधी को लिखा था कि भविष्य के भारत का प्रधानमंत्राी इस बात की व्याख्या करेगा कि समाजवाद का क्या अर्थ होता है। यह सामान्य नियम है कि राज्य स्वयं यह निर्धारित करे कि खान उद्योग तथा उत्पादन के अन्य साधनों से सार्वजनिक स्वामित्व का लाभ होता है अथवा व्यक्तिगत स्वामित्व से।[19] राजनीति की वास्तविकताओं में से कुछ सीमित वास्तविकताओं को समझने का अवसर पण्डित नेहरू को प्राप्त हुआ था। विचारों और अनुभवों के सम्मिश्रण ने उनके आदर्शो से सही दिशा प्रदान करने में सहायता प्रदान की तथा कुछ अर्थों में उनका राजनीतिक दर्शन उनके व्यावहारिक परिणामों में व्यक्त हुआ। नेहरू जी व्यापक मानवीय दृष्टिकोण के व्यक्ति थे। राजनीति के अध्येता के रूप में अपनी आध्यात्मिकता को पण्डित नेहरू ने मात्रा वैयक्तिक स्वरूप प्रदान किया। नेहरू के राजनीतिक दर्शन में अध्यात्म है धर्म नहीं। पण्डित नेहरू धर्म को व्यक्तिवादी अवधारणा मानते थे न कि समष्टिवादी अवधारणा। पंडित नेहरू जिस युग में थे उस युग का सांगोपांग प्रभाव नेहरू जी पर पड़ा। नेहरू के समकालीन विचारकों और घटनाओं ने उन्हें शिक्षा प्रदान की।

महात्मागांधी व्यापक अर्थ में आध्यात्मिक थे परन्तु महात्मागांधी के स्नेहिल संरक्षण में रहते हुए भी पण्डित नेहरू व्यापक आध्यात्मिकता से विमुक्त थे। इसके विपरीत मार्क्सवादी वाङ्मय का व्यापक प्रभाव पण्डित नेहरू के मस्तिष्क पर पड़ा था परन्तु उन्होंने मार्क्सवाद के सभी सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं किया था वह अनम्य सिद्धान्त के पक्ष में नहीं थे। वह अपने को प्रत्येक प्रणाली के सिद्धान्तों की परीक्षा करने के लिए स्वतंत्रा समझते थे और अपने विचारों को भी नये अनुभवों के आधार पर परिवर्तित करते रहते थे।[20] वाह्य प्रभावों के अतिरिक्त पंडित नेहरू ने विशेष रूप से व्यक्ति के लिए प्रयास किया, परिणाम स्वरूप उनके विचारों में व्यक्तिवाद प्रमुख था। उनके राजनीतिक विचारों की मौलिकता उनके व्यक्तित्व के क्रान्तिकारी पक्ष में विशेष रूप से समाहित थी, व्यक्तित्व की यह मौलिकता पंडित नेहरू के राजनीतिक चिन्तन में अपरिवर्तनीय रही। पण्डित नेहरू की मान्यता थी कि जनकार्यों के प्रति उनका निर्णय सदैव वैसा ही रहेगा क्योंकि वह अपने आप में पूर्ण रूपेण दृढ़ निश्चयी थे, इसलिए अपने आप पर नियन्त्राण में भी अधिक विश्वास रखते थे। परन्तु महत्वपूर्ण तथ्य है कि सत्ता प्राप्ति के उपरान्त वे अपने सिद्धान्तों से सामंजस्य स्थापित कर सके, लेकिन कुछ समय पश्चात् उन्हें स्वयं अपने ऊपर आश्चर्य हुआ कि पूर्व के समय से वह बहुत मात्राा में बदल चुके हैं और वह अनुभूति करने लगे थे कि क्या वह अपने दायित्वों से पीछे हटने लगे हैं? लेकिन पण्डित नेहरू के व्यापक वैचारिक क्षितिज का विहंगम अवलोकन किया जाय तो यह सहज निष्कर्ष निकलता है कि वह पूर्व की भांति अटल रहे। पण्डित नेहरू के अपने सिद्धान्तों से विचलन या उसकी पुनर्समीक्षा वास्ततविकता तथा परिवर्तित परिस्थितियों का प्रतिफल थी न कि उनके अन्तस के आत्म विश्वास की कमजोरी।

नेहरू जी ऐसे राजनीतिक सिद्धान्तों को पसन्द नहीं करते थे जो स्थिरता वादी तथा आलोचनात्क दृष्टिकोण से परिपूर्ण न हों। प्रजातंत्रा एवं समाजवाद के सिद्धान्त सदैव परिवर्तनकारी रहे हैं और समय के साथ उनका विकास होता रहा है। नेहरू जी की प्रमुख चिन्ता का विषय इच्छित आदर्शो का मूल्यांकन करना तथा लिये गये निर्णयों को नैतिक सिद्धान्तों के अनुसार क्रियान्वित करना था।

उनके स्वयं के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक सिद्धान्त तथा अन्य विषयों से सम्बन्धित विचार विशेष रूप से पण्डित नेहरू की लेखनी के रूप में एकत्रित हैं परन्तु इन विचारों में तारतम्यता का अभाव है। यह उनके पूर्व सिद्धान्तों की खोज करके वर्तमान के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास था। जिससे उनको 'विश्व इतिहास की झलक' (सन् 1935) लिखने की प्रेरणा प्रदान की।

उनकी आत्म कथा में उनके स्वयं के विचारों और उसके व्यवहारिक रूप पर वाह्य घटनाओं के पड़ने वाले प्रभावों की ओर संकेत किया गया है। स्वयं पण्डित नेहरू का मानना है कि ''मैंने अपने मानसिक विकास के उपरान्त ही लेखन संग्रह का कार्य आरम्भ किया है, इस प्रयत्न के प्रति उत्सुकता बनी रही। इसी क्रम में पण्डित नेहरू आगे कहते हैं कि अपने बीते हुए विचारों और अनुभवों को इस आशा से लिखा कि उनको कुछ शान्ति मिल सके।[21] हिन्दुस्तान की कहानी (डिसकवरी आफ इण्डिया 1946) पुनः इस दिशा में एक प्रयास था, जो उन्होंने जेल के एकान्त वास में जीवन की शून्यता को अपने व्यतीत क्षणों की स्मृति एवं अनुभव सेतु के माध्यम से भरने का प्रयास किया था और मानव से सम्बन्धित कार्यकलापों को इतिहास के माध्यम से अपने लेखन को एक विस्तृत आयाम दिया। इस सृजनात्मक कृत्य में उनका व्यक्तिगत व्यक्तित्व उनकी इच्छा के विरूद्ध आगे बढ़ गया जिसको प्रायः पण्डित नेहरू ने अपने लेखन में बाधित करने का प्रयास किया है। परन्तु कभी–कभी उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा व्यक्त कर दिया है। यह विश्व इतिहास, भारत का इतिहास तथा स्वयं के इतिहास के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। यह पर्याप्त रूप से उनके आन्तरिक विचारों और अन्य विचारों के साथ व्यक्त हुए हैं जो पण्डित नेहरू के राजनीतिक मस्तिष्क की दृष्टि को व्यापक रूप से उद्घाटित करते हैं।

तद्भांति पण्डित नेहरू द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गये मौलिक निबन्ध उनकी विचार धारा एवं सिद्धान्तों को स्पष्टता प्रदान करते है। उनके भाषणों एवं कथनों से पण्डित नेहरू के बहुआयामी व्यक्तित्व की झलक मिलती हैं उनके कई निबन्ध उनकी राजनीतिक विचार धारा के विपरीत एक स्वतंत्रा मन के गहरे चिन्तन के परिचायक हैं। पण्डित नेहरू के निबन्ध, भाषण तथा महत्वपूर्ण कथनों से उनके वैचारिक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। उनके विचारों को स्वरूप, सभाओं (डिबेट्स), वाद–विवादों (कन्वरसेशंस), कथनों (टाक्स) और पत्राों (लेटर्स) से भी प्राप्त होता है। पण्डित नेहरू के राजनीतिक क्रिया कलाप, उनकी रचनाओं तथा उनसे सम्बन्धित अन्य ग्रंथों के आलोचनात्मक अध्ययन से प्रतीत होता है कि उनके विचारों में मौलिकता नहीं है प्रत्युत पूर्वाग्रही विचारों का संग्रह मात्रा है।

नेहरू जी का व्यक्तित्व घटनाओं एवं विविध स्वरूपों से परिपूर्ण रहा है। पं0 नेहरू बहुआयामी व्यक्तित्व से परिपूर्ण हैं। एक क्रान्तिकारी के रूप में, विश्वशान्ति के अग्रदूत के रूप में, लोकतांत्रिाक समाजवादी के रूप में तथा भारत के सरकार के प्रधानमंत्राी के रूप में उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। इसके साथ ही वह स्वतंत्राता संग्राम के अजेय योद्धा थे जो उनकी राष्ट्र सेवा का अप्रतिम उदाहरण है। और इन सबसे पृथक् पण्डित नेहरू एक स्वतंत्रा तथा व्यक्तिवादी चिन्तक भी थे।

मनुष्य प्रायः वह नहीं बन पाता है जो आकांक्षाएं अपने मन में संजोये रखता है, प्रायः वह ऐसा परिनिर्मित हो जाता है जैसा परिस्थितियाँ उसे बनाती हैं। पण्डित नेहरू जो कुछ थे उन परिस्थितियों की उपज थे जिसमें रहकर उन्होंने गाँधी व दूसरे चिन्तकों और नेताओं के साथ कार्य किया था। परिस्थितियां अगर विपरीत भी होती या इससे भिन्न भी होती तो भी वह हिटलर और मुसोलिनी नहीं हो सकते थे।[22] यह वह तथ्य है जहां पण्डित नेहरू के मौलिक चिन्तन पर छाये धुंध छंट जाते हैं और नेहरू वाङ्मय तथा अन्य पाठ्य सामग्री की निष्पक्ष गवेषणा के उपरान्त निःसंदेह कहा जा सकता है कि पण्डित नेहरू मौलिक राजनीतिक चिन्तक थे। पण्डित नेहरू साम्यवाद में अनन्य आस्था रखते थे परन्तु वह स्टालिन नहीं बन सकते थे तथा यदि वह तानाशाही का अनुसरण करते तो भी वह स्टालिन और माओं नहीं बनते।[23] अध्ययन अनुक्रम के समस्त तथ्यों की मीमांसा के उपरान्त यह सहज निष्कर्ष निकलता है कि पण्डित नेहरू मूलतया लोकतंत्रा वादी, समाजवादी, मानता वादी, विश्वशान्ति प्रिय मौलिक चिन्तक थे, आज भी भारत एवं विश्व राजनीतिक चिन्तन का ऐतिहासिक विश्लेषण पण्डित नेहरू के बिना अधूरा रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मेरी कहानी : जवाहर लाल नेहरू, अनुवाद : हरिभाऊ उपाध्याय पृष्ठ संख्या 21 सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, 1964।
2. लोकदेव नेहरू : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर पृष्ठ संख्या 67 उदयाचल प्रकाशन, राजेन्द्र नगर पटना, प्रथम संस्करण, 1965।
3. मेरी कहानी : जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 38।
4. मेरी कहानी : जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 44।
5. समाजवाद की रूप रेखा : अमर नाथ अग्रवाल, पृष्ठ संख्या 213। विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, तृतीय संस्करण, 1947।
6. मेरी कहानी : जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 128।
7. नेहरू ए पोलीटिकल वायोग्रेफी : माइकल ब्रेचर पृष्ठ 118, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, 1959।
8. रीसेन्ट ऐसेज एण्ड राइटिंग्स : जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 188।
9. एन आटोबायोग्राफी : जवाहर लाल नेहरू दी बाडली हेड कम्पनी लन्दन प्रथम संस्करण, 1936। पृष्ठ संख्या 29।
10. एन आटोबायोग्राफी : जवाहर लाल नेहरू पृष्ठ संख्या 35।
11. सोवियत रसिया : पण्डित जवाहर लाल नेहरू, किताबिस्तान, इलाहाबाद प्रथम संस्करण 1928ए पृष्ठ संख्या 20
12. एन आटोबायोग्राफी : जवाहर लाल नेहरू, पृष्ठ संख्या 56–63
13. सोशलिज्म एण्ड कम्यूनिज्म इन इण्डिया : शंकर घोष एलाइड पब्लिकेशन प्रा0 लिमिटेड, प्रथम संस्करण 1971। पृष्ठ संख्या 50–51।
14. सोशलिज्म एण्ड कम्यूनिज्म इन इण्डिया : शंकर घोष, पृष्ठ संख्या 128।
15. सोशलिज्म एण्ड कम्यूनिज्म इन इण्डिया : शंकर घोष, पृष्ठ संख्या 261।
16. कन्वरसेशन विथ नेहरू : टाइबर मेन्डे सेकर एण्ड बारवर्ग, लन्दन, 1956ए पृष्ठ संख्या 31–31।
17. कन्वरसेशन विथ नेहरू : टाइबर मेण्डे, पृष्ठ संख्या 32।
18. एक असमाप्त जीवनी, दिनमान, 16 अक्टूबर 1977 के अंक से साभार।
19. ग्लिमसेज आफ वर्ड हिस्ट्री वाल्यूम–2; जवाहर लाल नेहरू लिन्डसे डमण्ड, लन्दन, 1949। पृष्ठ संख्या 851–852।
20. सोशलिज्म एण्ड नेशनल रिवोल्यूशन : आचार्य नरेन्द्र देव, पदम पब्लिकेशन बम्बई, 1946।पृष्ठ संख्या 206।
21. लोकदेव नेहरू : राष्ट्र कवि रामधारी सिंह ''दिनकर'' पृष्ठ संख्या 63।
22. उपर्युक्त पृष्ठ संख्या 68।
23. उपर्युक्त पृष्ठ संख्या 68।